in Bangalore, which the hon. Member has referred to, there will definitely be plans for this mill also. I can pass on the information to the hon. Member.

MR. CHAIRMAN: Question No. 103. (*Interruptions*)

SHRI V. GOPALSAMY: Sir, you have left out Tamil Nadu. Please permit me to put just one question.

MR. CHAIRMAN: We have already taken so much time.

SHRI DAYANAND SAHAY: All the time, we have been raising our hands. You do not look to us. (*Interruptions*)

स्मारक डाक-टिकटें जारी किया जाना

*103. **श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : क्या संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 1992 वर्ष के दौरान स्मारक डाक टिकटें जारी करने संबंधी सरकार की योजना में शहीद ऊधम सिंह मेदनलाल डोंगरा, सर छोटू राया खान अब्दुल गफ्फार खां और भारती भवन पुस्तकालय इलाहाबाद के नाम शामिल थे ;

(ख) यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है ;

(ग) स्वर्गीय रफी अहमद किदवई की जन्म-शती के अवसर पर उनके सम्मान में डाक टिकट जारी करने के लिए सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ; और

(घ) यह डाक टिकट कब तक जारी कर दिये जाने की संभावना है ?

संचार मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री सुखराम) : (क) विभाग द्वारा वर्ष 1992 में विशेष/स्मारक डाक टिकट जारी करने के लिए जो अनन्तिम कार्यक्रम बनाया गया था उसमें इन विशिष्ट व्यक्तियों/संस्थानों को भी शामिल किया गया है।

(ख) शहीद ऊधम सिंह और मदन लाल डोंगरा पर क्रमश: 31-7-92 और 28-12-92 को स्मारक डाक टिकट जारी किए गए थे । सर छोटू राम पर अभी तक डाक टिकट जारी नहीं किया जा सका क्योंकि डाक टिकट की डिजाइन के लिए उपयुक्त सामग्री जून, 1993 में ही मिल सकी। यह डाक टिकट सर छोटू राम की जन्म शताब्दी के अवसर पर जनवरी, 1995 में जारी करने का कार्यक्रम है। खान अब्दुल गफ्फार खां पर डाक टिकट 9-8-93 को जारी किया जाना है भारती भवन, इलाहाबाद पर डाक टिकट जारी करने के लए अभी तक कोई तारीख निश्चित नहीं की गई है।

(ग) और (घ) इस प्रस्ताव पर फिलैटलिक सलाहकार समिति द्वारा अपनी अगली बैठक में विचार किये जाने की संभावना है । डाक टिकट जारी करने की तारीख इस प्रस्ताव पर निर्णय ले लिए जाने के बाद ही तय की जा सकेगी ।

श्री सत्य प्राश मालवीय : माननीय सभापति जी, इसके पहले कि मैं प्रश्न पूछूं, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि मंत्री जी ने उत्तर दिया है, उसको दुरुस्त कर लें, क्योंकि मेरे प्रश्न का भाग "क" भारती भवन पुस्तकालय, इलाहाबाद के संबंध में है और आपने उत्तर भारतीय भवन, इलाहाबाद के संबंध में दिया है।

भारती भवन, इलाहाबाद एक दूसरी संस्था है इलाहाबाद की, तो मैं आपका जो कर्तव्य है, मैं उसका निर्वहन कर रहा हूं। कृपया, उत्तर पहले आप संशोधित कर लें।

भारती भवन पुस्तकालय, इलाहाबाद के संबंध में मेरा प्रश्न है और आपने उत्तर दिया है भारती भवन, इलाहाबाद के संबंध में-तो जहां आपने उत्तर दिया है वहां पर भारती भवन पुस्तकाल इलाहाबाद, बढ़ा दिया जायें । आपको मालूम तक नहीं है अभी।

If you kindly see, Sir, part (a) of my question refers to the Bharti-Bhavan Pustakalaya, Allahabad, whereas the hon. Minister has replied in regard to the Bharti Bhavan, Allahabad.

श्री सुख राम : मैं भी चेक-अप कर लूंगा। अगर इसके लिखने में गलती हुई होगी, तो उसको मैं दुरुस्त कर लूंगा।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : मान्यवर, अब प्रश्न यह है कि श्री रफी अहमद किदवई के संबंध में मैंने इसी सदन में 23 फरवरी, 1993 को प्रश्न उठाया था कि उसका शताब्दी वर्ष आ रहा है और उनके सम्मान में संचार विभाग डाक टिकट निकाले तो 16 मार्च, 1993 को मंत्री श्री सुखराम जी ने उत्तर दिया कि–

that your proposal for issuing a stamp to commemorate the birth centenary of late Shri Kidwai will be placed before the Philatelic Advisory Committee for its consideration. This reply was given to me by the Minister on 16th March, 1993. Now the Minister has again said in his reply that the Philatelic Advisory Committee is considering this in its next meeting. Since the birth centenary celebraton of Shri Kidwai has already started, will you please fix a definite date today and announce it here?

SHRI SUKH RAM: Sir, I assure the hon. Member that this commemorative stamp will be issued in the name of Shri Kidwaiji on his birth centenary.

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : मान्यवर, भारती भवन पुस्तकालय, के संबंध में 29 नवम्बर, 1991 को इसी सदन में अतारांकित प्रश्न संख्या–827 का मुझे उत्तर मिला था कि यह डाक टिकट 1992 के दौरान जारी करने का प्रस्ताव है और 29 नवम्बर, 1991 के पहले मैंने जब इस प्रश्न को उठाया था तो उस समय भी यही उत्तर दिया गया था कि भारती भवन पुस्तकालय के संबंध, में डाक टिकिट 1992 में जारी कर दिया जाएगा। मान्यवर, 1889 में इलाहाबाद में कांग्रेस का चौथा सम्मेलन हुआ था और उसी साल 1889 में इस संस्था की स्थापना हुई थी और वहां के लाला ब्रजमोहन भल्ला थे उन्होंने इस संस्था की स्थापना की थी। इस संस्था के सभापति 1902 से 1947 तक महामना मदन मोहन मालवीय थे और 1948 से लेकर आजीवन राजऋषि पुरुषोत्तम दास जी टंडन इसके सभापति थे, डा० कैलाश नाथ काटजू इसके ट्रस्टी थे और हिंदी के मशहूर विद्वान और साहित्यकार श्री बालकृष्ण भट्ट और श्रीधर पाठक जैसी हस्तियां इस संस्था से संबंधित थीं। तो मैं जानना चाहता हूं कि जब विभाग ने तय कर लिया कि 1992 में डाक टिकट निकालेंगे फिर 1992 में क्यों नहीं निकाला गया और क्या वजह है कि आज भी मंत्रीजी निश्चित तारीख नहीं बता पा रहे हैं?

श्री सुख राम : सभापति जी, इसमें हमारी तरफ से कोई देरी नहीं है। हमने जिन लोगों ने स्पांसर किया, उनको सूटेबल मटैरियल के संबंध में लिखा मगर वह मैटिरियल मिला नहीं और उसके बाद जो रेजीडेंट कमिश्नर हैं, उनको भी लिखा और जो संबंधित लोग हैं उनसे भी पत्र-व्यवहार किया।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : कहां के रेजीडेंट कमिश्नर?

श्री सुख राम : अगर नाम के बारे में आपको शक है जोकि इसमें मुझे मिला भारती भवन पुस्तकालय, इसको तो मैं... **(व्यवधान)**

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : आप कहते हैं रेजीडेंट कमिश्नर को लिखा, तो कहां के रेजीडेंट कमिश्नर को लिखा?

श्री सुख राम : अब मैं डेट तो नहीं बता सकता।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : आपने उत्तर दिया कि रेजीडेंट कमिश्नर को पत्र लिखा, तो कहां के रेजीडेंट कमिश्नर को पत्र लिखा था ?

श्री सुख राम : मैं आपको डेट तो नहीं बता सकता, मैं माननीय सदस्य को विश्वास दिला सकता हूं कि ज्योंही इसका मैटिरियल मिल जाएगा, यह कॉमेमोरेटिव स्टाम्प हम इश्यू कर देंगे ।

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Kindly protect me.

MR. CHAIRMAN: He says that he has not got the material.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Sir, in this very House he has said that the commemorative stamp relating to Bharti Bhawan Library, Allahabad will be issued in the year 1992. Now he has replied that no date has been fixed. Why this delay?

SHRI SUKH RAM: Sir, the proposal was approved by the Philatelic Advisory Committee on 6-8-1990. The sponsor was thereafter requested to make available suitable material, like transparencies, photographs, art works, to enable us to design the stamp for the first day cover, indicating that the Department proposed to issue the stamp sometime in 1990-91, but that material could not be sent by the concerned sponsor. That is why it has been delayed. But I assure the hon. Member, the moment this material is available, we would definitely issue the stamp.

MR. CHAIRMAN: Mr. Mohd. Masud Khan.

SHRI CHATURANAN MISHRA: This question could not be cleared, Sir. Have you ordered materials with regard to personalities like Malaviyaji and Purushottam Das Tandon and do you intend to get them? Is not our Government in a position to get materials about these personalities also? Malaviyaji and Purushotam Das Tandon are well-known personalities. It will not come from America or Britain or Germny. You must have it. Otherwise, what type of a Government do we have? This is the question. You should help us. These are well-known personalities.

SHRI SUKH RAM: Sir, the last reminder was sent...

...(*Interruptions*)...

SHRI CHATURANAN MISHRA: It is not the job of the Council of States...(*Interruptions*)...

AN HON. MEMBER: The Minister is giving only reminders!

MR. CHAIRMAN: The question is whether the Government is not able to get it independently or whether there is any technical problem, that you cannot do it unless the people concerned send you the transparencies.

SHRI SUKH RAM: Sir, we are depending on them. Those who sponsor the names should send the material.

...(*Interruptions*)...

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : सभापति महोदय, मैं मंत्री महोदय को यह सूचना देना चाहता हूं कि उन्हीं के सहयोगी...

MR. CHAIRMAN: Let us hear Mr. Mohd. Masud Khan.

श्री मुहम्मद मसूद खान : चेयरमैन साहब, जंगे आजादी के रहनुमाओं के नाम से डाक-टिकट निकलता है तो नई पीढ़ी और पुराने लोगों तक के जेहन में याद ताजा होती है। मैं मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि आपकी जो कमेटी है, उस

कमेटी से कहिए कि वसीउन्नजरी अपने दिमाग और दिल में ले आएं और जल्द से जल्द रहनुमाओं के नाम का डाक टिकट जारी करें। उसमें एक सजेशन है मेरा, अलामा शिबली नोमानी, यह मौलाना आजाद के उस्ताद थे। अगर अलामा सिबली नोमानी न होते तो मौलाना आजाद को रोशनी न मिलती कि वह जंगे आजादी के सिलसिले में अपना आगे कदम उठाते। आज मशरीकी ऊलून में उनसे बढ़कर कोई ऐसा आदमी नहीं है। आजमगढ़ के रहने वाले थे, बड़े किताबों के मुसन्निफ हैं वह, मौरिख हैं बहुत बड़े, उनके नाम से उनकी यादगारी टिकट जारी करने पर क्या मंत्री जी विचार करेंगे और जल्दी जारी करेंगे या नहीं? यह मेरा मंत्री जी से सदाल है।

श्री सुख राम : सर, माननीय सदस्य का जो सुझाव हैं, यह लिखकर हमको दे दें, उसको फिलेटेलिक कमेटी में रखूंगा। अगर वह नार्म्स के मुताबिक पाया गया तो जरूर विचार करेंगे।

डा. संजय सिंह : माननीय महोदय, आज दुनियां म स्टेम्प क्लेक्शन की एक होबी बहुत बढ़ रही हैं। समय-समय पर अपने देश में और दुनियां के देशों में इसके कंपीटीशन भी होते हैं, परन्तु दुर्भाग्य से अपने भारतीय स्टैम्प की क्वालिटी बहुत ही खराब है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या उनके विभाग में ऐसी कोई योजना विचाराधीन हैं, जिससे कि अपनी स्टैम्प क्वालिटी को बढ़ाने की कोई व्यवस्था हो? यदि ऐसा है तो योजना क्या है और यदि नहीं है तो क्यों नहीं है?

श्री सुख राम : सर, सभापति जी, माननीय सदस्य तो इसी मंत्रालय के मंत्री भी रह चुके हैं, उन्होंने भी जरूर विचार होगा, चूंकि इस विभाग के मंत्री थे, कि क्वालिटी बढ़ानी चाहिए। यही कारण है, जबकि माननीय सदस्य जरा नाराज हो रहे थे, जब तक हमको अच्छा मैटिरियल नहीं मिलता, मैटिरियल आया हैं, मैं कहता हूं कि मैटिरियल आया है मगर वह ठीक नहीं था। इस वास्ते...

डा० संजय सिंह : मैटिरियल का क्वालिटी से क्या संबंध है?

श्री सुख राम : मैं आपको बताना चाहता हूं कि ठीक मैटिरियल आए, उसका डिजायन ठीक बने और उसकी अच्छी इम्पोर्टेन्स हो तभी हम उसको एक्सेप्ट करते हैं वरना जो अच्छा मैटिरियल नहीं आता, फोटोग्राफी अच्छी नहीं है, डिजायन अच्छा नहीं है तो उसको तब तक प्रिंट नहीं करते जब तक अच्छा मैटिरियल न आए।

श्री वीरेन्द्र कटारिया : चेयरमेन साहब, मैं मिनिस्टर आफ कम्युनिकेशन से पूछना चाहूंगा कि जो उन्होंने उनके विभाग में यह यादगारी टिकट जारी करने के लिए एक सलाहकार कमेटी बनाई है, इसका क्या मापदण्ड है और वह किस तरीके से इन्तखाब करते हैं कि जिनके लिए यादगारी टिकट जारी किए जायें? हिन्दुस्तान में बहुत से लोगों ने कुर्बानियां दी हैं। मेरे ख्याल से 47 साल की आजादी के बाद भी अभी बहुत से लोग उस लिस्ट में नहीं आए हैं। तो लोग आहिस्ता-आहिस्ता भूलते जायेंगे कि किन लोगों की वजह से आज हिन्दुस्तान आजाद हुआ है। तो मैं मिनिस्टर साहब से यह सवाल पूछना चाहता में कि एक प्रपोज़ल भेजी गई थी कि शहीदे आज़म सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव की एक ज्वाइंट यादगार टिकट जारी की जाए। बहुत देर से उसका कोई जवाब नहीं आया। वह अब किस पोजीशन में है, यह मैं जानना चाहूंगा?

एक बात और भी मैं जानना चाहूंगा कि पंजाब के चीफ मिनिस्टर सरकार प्रताप सिंह कैरों थे, जो कि माडर्न पंजाब के जन्मदाता थे, उनकी यादगार के लिए भी एक टिकट की प्रपोज़ल भेजी गई थी, मैं उसके बारे में भी जानना चाहूंगा?

एक और बात उनसे मैं पूछना चाहूंगा, जैसा कि उन्होंने कहा हैं कि उनको मैटिरियल नहीं मिला है, गवर्नमेंट की डिस्पोज़ल के इतने माध्यम हैं, इतने मीन्स हैं कि जो प्रपोज़ल भेजता है, जो स्पांसर करता है, उससे कोई मैटिरियल लेने की

जरूरत नहीं हैं । यह तो एक लंगड़ा बहाना है । तो मैं उनसे जानना चाहूंगा कि जल्दी से जल्दी अगर कोई टिकट वक्त पर जारी न की जाए, जैसे कि शहीदे आज़म भगत सिंह का जन्म दिन 23 मार्च है, अगर उस वक्त यह टिकट जारी न की जाए और आगे-पीछे जारी की जाए तो फिर क्या बात है ?

श्री सुख राम : सभापति जी, जो भी सुझाव हमें आते हैं, चाहे वह माननीय सदस्यों के हों या किसी इंस्टीट्यूशन के हों, उन सुझावों को हम फिलैटलिक एडवाइज़री कमेटी के सामने रखते हैं और उसमें चाहे वह पर्सनेलिटी है, इंस्टीट्यूशन है या फ्लोरा, फौना वगैरह है, उसके ऊपर हम डाक-टिकट जारी करते हैं। मगर उसके लिए गाइडलाइंस दी हुई हैं और जो एडवाइज़री कमेटी है, वह गाइड लाइंस पर चलती है । आप माननीय सदस्य अगर चाहें तो मैं यहां भी पढ़ देता हूं, लेकिन मैं सदन का समय बर्बाद नहीं करना चाहता, आपको उसकी प्रतिलिपि भेज दूंगा । उसके अनुसार वह करते हैं । और जो आपने प्रताप सिंह कैरों की बात की, मुझे मालमात् नहीं है क्योंकि अभी तक जो रिकार्ड मेरे पास है, उसमें उनका नाम नहीं है । उसमें अगर आप उनका नाम देंगे तो हम विचार करेंगे। सरदार भगत सिंह, और मेरे पास जो सूचना है उसके अनुसार शहीद उधम सिंह, मदन लाल ढींगरा का तो डाक टिकट इश्यू आलरेडी हो चुका है । और अगर आपके कोई सुझाव हों, उनको आप रखिए, उन पर जरूर विचार करेंगे और आपको समय पर इन्फार्म भी करते रहते हैं जो कि स्पांसर करते हैं उनके नाम ।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : सभापति महोदय, आपको बहुत बहुत धन्यवाद । जैसा कि मालवीय जी ने अभी कहा था, जहां तक भारती भवन पुस्तकालय का संबंध है, उसके उत्तर प्रदेश और उत्तर भारत की सांस्कृतिक चेतना, राजनैतिक चेतना, राजनैतिक जागृति और वहां के सामाजिक जितने भी उत्थान हुए है, वे संबंधित रहे हैं । मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अभी तक मंत्री महोदय को उसके संबंध में मेटिरियल उपलब्ध नहीं हो सका क्या है। उन्होंने इन्फारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग मिनिस्ट्री से, मिनिस्टर साहब उनके पीछे बैठे हुए हैं, उनसे यह जानने की कोशिश की है कि उनके मंत्रालय के पास इस संबंध में उपयुक्त सामग्री उपलब्ध है या नहीं ? क्योंकि इसकी शताब्दी के समय उन्होंने एक स्पेशल फीचर भारत भवन पुस्तकालय के संबंध में दिखलाई थी । क्या कोई प्रयत्न किया गया है इस प्रकार का सामंजस्य बैठाने का दोनों मंत्रालयों के बीच में ?

श्री सुख राम : सभापति जी, जैसा मैंने कहा कि इस संबंध में जो फोटो प्रिंट और जो आर्ट वर्क भेजे गए, वे ठीक नहीं पाए गए और उस वजह से इसका जो डिजाइन था, वह ठीक नहीं बन रहा था, इस वजह से . . . (**व्यवधान**)

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : सभापति जी, मैं तो जानना चाहता हूं कि इन्फारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग मिनिस्ट्री के पास जो मेटिरियल था, जो उन्होंने अपने फीचर में दिखाया था, उसे आप क्यों नहीं प्राप्त कर सके ?

श्री सुख राम : हां, मैं ब्राडकास्टिंग मिनिस्ट्री से सम्पर्क करूंगा और अगर उनके पास आर्ट का कोई ऐसा प्रिंट वगैरहा या कोई फोटो वगैरहा उपलब्ध हों तो उनसे मदद लेने की कोशिश करूंगा ।

Loan for Self employment

*104. SHRI G. G. SWELL:†
SHRI CHIMANBHAI MEHTA:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) what are the reasons that the target of beneficiaries under loan for self-employment for educated unemployed was brought down from 2.50 lakhs in 1983-84 to 1.25 lakhs in 1991-92 and the reasons that the actual beneficiaries were sizeably less than targetted figures;

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri G. G. Swell.